अनुभव 9

आज जा रहा हूँ, कल न लौटने के लिए

जीवन सिंह ठाकुर*

एक शिक्षक सेवानिवृत्ति के समय कैसा महसूस करता है, उसके मन में उठने वाले सवालों को शब्दों में बयाँ करना थोड़ा मुश्किल है। इस लेख में एक शिक्षक के अनुभवों को बेहद ही खूबसूरती से बताया गया है। शिक्षण के दौरान शिक्षक के समक्ष आने वाली चुनौतियों और उनके समाधानों के अलावा उसके मन में चल रहे विचारों को भी प्रस्तुत किया गया है। एक शिक्षक अपनी सेवा से तो निवृत्ति ले लेता है, लेकिन उसकी यादों और उससे मिले अनुभवों से वह अपना दामन नहीं छुड़ा पाता। तो आइए, इस लेख के माध्यम से सेवानिवृत्ति के समय एक शिक्षक की मनोस्थिति जानने की कोशिश करें।

जिंदगी के चालीस बरस, लंबे चालीस बरस कैसे बीत गए? पता ही नहीं चला। बड़ा अजीब लगता है। यूँ महसूस होता है कि अरे! अभी-अभी तो सन् सत्तर-इकहत्तर था। मन गीले साबुन की तरह छूट कर, पूरे चालीस बरस पीछे चला जाता है। उस गीले साबुन को जितना पकड़ते हैं, वह उतनी ही तेजी से छूटता है। इस छूटने में खीझ भी है और खुशी भी। उम्र का फासला सिमट कर युवा आकार में बदलने लगता है। साबुन, युवा पलों में बदल कर समय के सामने 'सावित्री' की तरह खड़ा हो जाता है और प्राणों की भीनी-भीनी जीवंतता लौट आती है। वाकई, ये बरस फूलों की खूशबू पर सवार थे।

भीनी-भीनी और हौले-हौले चलती हवाओं की खुशबू और वक्त रंग-बिरंगी तितली बन गया था। उसके परों पर ये बरस केसर की क्यारियों में घुलते रहे।

हालाँकि, ये चालीस बरस इतने भी आसान नहीं थे। ये वक्त कठोर और चट्टानी चुनौतियों पर उगी हुई हरी घास थे। ये घास आश्वस्त करती थी कि अभी संभावनाओं के फूल, उम्मीदों की तितलियाँ, होठों पर मुस्कुराहट के अंकुर फूटेंगे, वे रातरानी की तरह अँधेरे में खुशबुओं के उजास बिखेरेंगे और दिन की तमाम तपिश और दुनियादारी की त्रासदियाँ तिरोहित होकर रातरानी की गंध में समा जाती थी। जिंदगी बड़ी

* 422, अलकापुरी, देवास, मध्यप्रदेश-455001

अजीब है, कठोर भी और बच्चे की मुस्कुराहट और किलकारी भी।

शिक्षक बन कर बच्चों के बीच आ गया था। पहली बार उन पहाड़ी रास्तों के कठोर घुमाओं से गुज़रते हुए, लू-लपट के बीच। एक सन्नाटे भरे रास्ते के आस-पास कुछ बैलगाड़ियाँ खड़ी थीं। बैलगाड़ियों की कतार के पीछे एक जीर्ण-शीर्ण सी इमारत थी। पूछने पर पता चला कि वह विद्यालय है। बैलगाड़ियों की कतार के बीच रास्ता तलाश कर मैं उस जीर्ण-सी इमारत के परिसर में आ गया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि मुझे ज़रा-सा भी परायापन, अनजानापन, अपरिचय महसूस ही नहीं हुआ था। इमारत के परिसर में गहरा नीम का पेड़ था और दूर-दूर तक पहाड़ों की श्रृंखला थी, जिनमें बीच में नीलापन छाया हुआ था। मन अंदर तक उस नीले-नीले गहरेपन से भर उठा था। इमारत का फर्श कच्चा था। छत में यानी पटाव में, उजालदानों में कबूतर गुटुर-गूँ कर रहे थे। जैसे-मेरे जैसे अजनबी की शिनाख्त के बाबत विचार-विमर्श कर रहे हों। फटी टाट-पटरियों पर बैठे बच्चे पट्टियों पर कुछ लिख रहे थे। उस दिन मुझे ऐसा क्यूँ लगा कि मैं यहीं से कहीं गया था और फिर अपनों के बीच लौटा हूँ। शायद यही अपनापन मेरे अंतस से घुमड़-घुमड़ कर बाहर आ गया था। मैं उसी उजालदान में बैठे कबूतरों की गुटर-गूँ और बच्चों की किलकारियों में समा गया था। एक शिक्षक की ज़िंदगी का यह पहला दिन था। यह दिन पगडंडी बन कर मुझे सरपट भगा ले जा रहा था, एक अल्हड़ बालक की तरह और मैं उन्हीं का हिस्सा हो गया था। मेरे मन में बहुत से प्रश्न उठ रहे थे जैसे- एक अध्यापक बच्चों को क्या दे सकता है? कौन-सा और कैसा आश्वासन दे सकता है? और उनके उत्तर भी मेरे पास थे। वह बच्चों को एक खूबसूरत दुनिया का सपना दे सकता है। आँखों के बियाबान में दूर कहीं टिमटिमाती रोशनी के ख्वाब दे सकता है। देने को उसके पास क्या है? कठोर दुनिया से टकराकर चूर-चूर होती उम्मीदें, तिड़कते, बिखरते सपनों को निरंतर जोड़ते हुए, थामते हुए, बच्चों की उम्मीदों को थपकियाँ ही तो देता है। हर बार बच्चों के टूटते सपनों को एक आशा की डोर से बाँधकर दूर गगन में उड़ाता है, जहाँ से पूरी दुनिया दिख सके। आँखें टकटकी लगाये सपनों को, उसके नीलेपन को, हकीकत को अपने ख्वाबों में देखने लगते हैं। ख्वाबों की तामीर से घर, देश, दुनिया के निर्माण में कहीं अपनी छोटी-सी निर्माणकारी, रचनात्मक भूमिका तय होते देखना एक शिक्षक का भी तो सपना होता है, जिसका अक्स वह बच्चों की आँखों में, उनकी हँसी में, किलकारियों में देखता है।

पूरे, भरे-पूरे चालीस बरस मैं बच्चों की किलकारियों में रहा। मासूम और भोलेपन की दुनिया में रहा। बच्चों की निर्दोष आँखों की चमक में रहा। कभी उनके उदास चेहरों, तो कभी आँसुओं से भरी पलकों में रहा। वे होंठ जब मुस्कुराते थे तो लगता था, तपते रेगिस्तान में ठंडी हवाओं के झोंके आ रहे हों। वे कुछ कहते थे, मैं सुनता था। लेकिन, उनका ''कुछ कहना'', उनके उन शब्दों में अर्थों के विशाल भवन और दुनिया समायी होती थी।

किताबों के पाठ और कविताएँ, अक्षर-अक्षर, शब्द-शब्द शहद की मानिंद हो उठते थे। वाकई वह कक्षा सिर्फ कक्षा नहीं होती थी। वह मुस्कुराहट और उमंग से भरी डलिया होती थी जो आने वाले किसी उत्सव का पता देती थी। आज इन चालीस बरस लंबी किलकारियों, हँसते-खेलते, मुस्कुराते बच्चों की दुनिया से जा रहा हूँ। कितना सूना और सन्नाटा-सा मैं अपने चारों तरफ पा रहा हूँ। उस सन्नाटे में असंख्य मुस्कुराहटें, असंख्य किलकारियाँ और चहचहाहट है। फिर भी पता नहीं एक एकाकीपन मुझ पर उतर आया है और मैं आज मुझसे छूट रहे बच्चों की आँखों में, उनके चेहरों पर, उनकी मुस्कुराहट में अपना अक्स देख रहा हूँ। वे समझ नहीं पा रहे हैं कि मैं क्यों जा रहा हूँ और मेरी पलकों पर आँसुओं की रेलमपेल क्यूँ है? उन शिक्षकों द्वारा दिए गए मान-सम्मान को, उनके अंतस मन से मिले अपनेपन को महसूस करता हूँ, जिन्होंने मुझे ठेठ अपना समझा था और समझते रहे थे। रिश्तों की डोर से बँधे रहे। जाते वक्त यह डोर कितनी मजबूती से बाँध रही है। हम सभी पारिवारिक वातावरण में, पूरे सामाजिक जवाबदेहियों में रहे। उन अधिकारियों और जन-प्रतिनिधियों ने, नागरिकों ने बेहद अपना समझा, मान दिया, स्नेह दिया। उनके प्रति 'आभार' का शब्द कह कर 'अभिव्यक्त' नहीं किया जा सकता।

हालाँकि, विगत वर्षों में हममें से कई शिक्षक काफी परेशान रहे हैं। शिक्षक के पठन-पाठन के अनुभवों को न शासन ने, न ही विभाग ने कभी महत्त्व दिया। शिक्षकों ने अपने सक्रिय शैक्षिक जीवन में जो पठन-पाठन की, अध्यापन की तकनीक विकसित की, कुछ पाठ, कुछ मौलिक किताबें (अप्रकाशित) तैयार कीं, इन सबके प्रति विभाग की बेरूखी, उपेक्षा ने अच्छे परिणामों पर जैसे रोक लगा दी है। लंबे शिक्षकीय जीवन में कई शिक्षक, शिक्षा पर, शिक्षण तरीकों पर, किताबों पर, अध्यापन और बाल मनोविज्ञान पर मौलिक खोज संपन्न करते हैं। एक बड़ा परिणाम तथा उपलब्धि उनके पास होती है। लेकिन, राजधानी से आयातित कार्यक्रम, योजनाएँ ही सर्वेसर्वा होती हैं। जो कुछ करेंगे ऊपर वाले करेंगे। इससे शिक्षकों में विचलन, तल्खी, उदासी, नैराश्य फैला हुआ है। विभाग और शासन से ज़्यादा जन-प्रतिनिधियों को गंभीरता से इस पर विचार करना होगा। अविलंब कुछ शुरुआत करनी होगी।

जीवन में अनुभवों का विशाल गुलदस्ता मिला है। तल्खी भी, प्यार भी, लेकिन बच्चों के बीच जाकर शिक्षक सब कुछ भूल जाता है और वह सिर्फ बच्चों का हो जाता है। इन वर्षों में उनकी मासूम मुस्कुराहट, हँसी और उम्मीदों के लिए निरंतर अविराम लगा रहा। उनकी आशाएँ रहें, उमंग की बेल बढ़ती रहे, इसी उम्मीद से उदासी और आँसू भरी आँखों में सपनों के आकाश सँवारता रहा। क्या पता कितना सफल रहा-कह नहीं सकता। गाँव से जिले तक, जिले से प्रदेश तक, प्रदेश से दिल्ली तक के सम्मान मिले। लेकिन, एक शिक्षक के लिए बच्चों की विश्वास भरी मुस्कुराहट, उम्मीदों से लबरेज़ आँखों के सामने तमाम पुरस्कार, सम्मान सब बौने हैं। और अब लंबे दीर्घ और विशाल वर्षों

के पल-पल जीवंतता से भरे पलों के बाद आज सोच रहा हूँ कि रोज़ यहाँ से जाता था कि कल वापस लौटूँगा। लेकिन आज जा रहा हूँ, कल वापस नहीं लौटने के लिए।

लेकिन खाली हाथ नहीं लौट रहा हूँ। एक प्यार भरी, अपनेपन से पगी आँखों की रिश्तेदारी, निर्दोष मासूम मुस्कुराहटों, नि:स्वार्थ किलकारियों और विश्वास, स्नेहबंधन की अपार दौलत लेकर जा रहा हूँ। आज मैं अपने को जितना अमीर, जितना भरा-पूरा महसूस रहा हूँ कि यह सिर्फ मेरे दिल और दिमाग की विशाल दुनिया जानती है। पलकों को बंद करते ही ये तमाम प्यार मेरे आस-पास 'बीहू' और 'बैसाखी' गुनगुनाने लगते हैं। किलकारियाँ मेरे चारों तरफ भर जाती हैं। दुनिया का कोई दुख, कोई व्यंग्य, कोई तल्खी, परेशानी, इस 'अपनेपन' के सुरक्षा कवच को भेद नहीं सकती। जीवन में कई मौके आए, अपार परेशानियों से घिर गया, लेकिन इस अपनेपन, प्यारी मुस्कुराहटों की यादों ने उन तीखी, घायल करने वाली स्थितियों के हाथ थाम लिए और उनके हाथों में प्यार के फूल दिए।

सच कहूँ, विद्यालय, बच्चे, उनकी आँखें, उनके आँसू और मुस्कान, उनकी खिलखिलाहट में मेरा घर था। उस प्यारी दुनिया में मेरा घर तिनका-तिनका चुन कर बच्चों ने बनाया है। आज कहने को अपने घर जा रहा हूँ और आज मैं 'बेघर' हो गया हूँ। बेघर होना जिंदगी की कितनी बड़ी त्रासदी होती है। लेकिन, मेरा घर वहीं रहेगा। इतनी लंबी यात्रा उनको सौंप आया हूँ। उनका साथ, अपने साथ ले आया हूँ। इस तरह हम कहीं दूर नहीं जाएँगे। उन अहसासों के साथ प्यारी, खूबसूरत, अपनेपन से भरी दुनिया में रहेंगे। उनकी दुनिया के लिए रहेंगे।

शिक्षक साथियों! बच्चों की खुशियों, उनकी मुस्कुराहटों, खुशियों से भरे होठों, उनकी आँखों के सपनों का ध्यान रखना । अक्षर, शब्द, शहद की मानिंद उनके मानस में उतरे, एक दिन वे अपने देश, दुनिया को अपना समझें, दूसरों की खुशियों के लिए जिएँ। अपना प्यारा संसार रचें, जिसमें आप हम सभी रह सकें। बच्चों का हौसला, उनकी हिम्मत कभी नहीं टूटे, ये ख्याल रखना। यह सब लिखते हुए मेरी आँखें पूरी तरह से नम हैं। आँसुओं से पलकें भारी हैं। तमाम दृश्य झिलमिला रहे हैं। क्या कहूँ ... फिर कभी...।

❑❑❑